सूरह — एक कहानी

सूरह अल-बुरूज

बुर्ज

पूरा सफ़र — ख़ंदक़ वाले, और ईमान की फ़तह —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 85 • 22 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वस्-समा-इ ज़ातिल्-बुरूज

1. क़सम है बुर्जों वाले आसमान की।

क़ुतिल अस्हाबुल्-उख़्दूद

4. हलाक हुए ख़ंदक़ वाले।

व मा नक़मू मिन्हुम इल्ला अंय्-यु'मिनू बिल्लाह

8. और उनसे सिर्फ़ इसी बात का बैर था कि वो अल्लाह पर ईमान लाए।

वल्लाहु 'अला कुल्लि शै-इन शहीद

9. और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह हैं।

व हुवल्-ग़फ़ूरुल्-वदूद

14. और वो बख़्शने वाले, बहुत मोहब्बत करने वाले हैं।

बल हुव क़ुरआनुम्-मजीद। फ़ी लौहिम्-महफ़ूज़

21-22. बल्कि ये बुलंद मर्तबा क़ुरआन है, महफ़ूज़ लौह में।

देखते हुए आसमान की क़सम

बेटा, यह सूरह मक्का में उस वक़्त नाज़िल हुई जब शुरू के मुसलमानों पर अज़ाब ढाया जा रहा था — बिलाल (रज़ि0) जलती रेत पर, सुमय्या और यासिर (रज़ि0) शहीद, ख़ानदान तबाह। और अल्लाह ने उन्हें एक ऐसी सूरह भेजी जो उन मोमिनीन की क़ौम के बारे में थी जिन्हें सदियों पहले ज़िंदा जला दिया गया था।

सोचिए क्यों। जब आप तकलीफ़ में होते हैं और आपको लगता है कि आप जैसी तकलीफ़ किसी ने नहीं उठाई, तो अल्लाह आपको वो लोग दिखा देते हैं जो पहले गुज़रे — ताकि आपको पता चले कि आप एक लंबी, बा-इज़्ज़त क़तार में खड़े हैं।

'वस्-समा-इ ज़ातिल्-बुरूज — क़सम है उस आसमान की जिसमें बड़े बुर्ज हैं — वल्-यौमिल्-मौ'ऊद — और उस वादा किए गए दिन की — व शाहिदिंव्-व मश्हूद — और गवाह की और जिस पर गवाही दी जाए उसकी।'

बेटा, तीनों क़समें साथ देखिए: बुर्जों वाला आसमान — वसीअ, मुरत्तब, देखता हुआ; वो दिन जिसका वादा कर दिया गया और जो यक़ीनन आ रहा है; और 'एक गवाह और वो जिस पर गवाही दी जाए'। उलमा ने आख़िरी की कई तशरीहात की हैं, और उनमें से एक यह है: हर वो चीज़ जो देखती है और हर वो चीज़ जो देखी जाती है। गोया यह कहा जा रहा हो: इस कायनात में कुछ भी बग़ैर गवाह के नहीं होता।

ख़ंदक़ वाले

'क़ुतिल अस्हाबुल्-उख़्दूद — हलाक हुए ख़ंदक़ वाले — अन्-नारि ज़ातिल्-वक़ूद — उस आग के, जो ईंधन से भरी थी — इज़ हुम 'अलैहा क़ु'ऊद — जब वो उसके पास बैठे हुए थे — व हुम 'अला मा यफ़्अ'लून बिल्-मु'मिनीन शुहूद — और वो, जो कुछ मोमिनों के साथ कर रहे थे, उसके गवाह थे।'

बेटा, एक खाई खोदी गई, ईंधन से भर दी गई, और आग लगा दी गई। मोमिनीन को लाया जाता और उन्हें एक ही चुनाव दिया जाता: अपना दीन छोड़ दो, या जल जाओ। और जो जला रहे थे वो दूर से हुक्म दे कर नहीं बैठे थे — वो ख़ंदक़ के किनारे बैठ कर देखते थे। उन्होंने इसे एक तमाशा बना दिया था, एक तफ़रीह।

और अल्लाह उनका पूरा महरिक एक ही आयत में बयान कर देते हैं — वो आयत जो हर दौर के ज़ुल्म में गूँजती रही है: 'व मा नक़मू मिन्हुम इल्ला अंय्-यु'मिनू बिल्लाहिल्-'अज़ीज़िल्-हमीद — और उन्हें उनसे सिर्फ़ इसी बात का बैर था कि वो अल्लाह पर ईमान लाए, जो ज़बरदस्त हैं, क़ाबिल-ए-तारीफ़ हैं।'

बेटा, इस बात का वज़न महसूस कीजिए। कोई जुर्म नहीं। न चोरी, न बग़ावत, न किसी का नुक़सान। उनका वाहिद 'क़ुसूर' ईमान था। और ग़ौर कीजिए कि यहाँ अल्लाह के कौन से दो नाम चुने गए: अल-'अज़ीज़, ज़बरदस्त — जिन पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता — और अल-हमीद, क़ाबिल-ए-तारीफ़ — जो हर तारीफ़ के लायक़ हैं।

'अल्लज़ी लहू मुल्कुस्-समावाति वल्-अर्ज़ — वो जिनकी है आसमानों और ज़मीन की बादशाहत — वल्लाहु 'अला कुल्लि शै-इन शहीद — और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह हैं।'

बेटा, सूरह अब उस सवाल का जवाब दे रही है जो हर सताए हुए दिल में सुलगता रहा होगा: अल्लाह कहाँ थे? जवाब: वो उस ख़ंदक़ के ऊपर वाले आसमान के मालिक थे, और वो हर शोले पर गवाह थे। उनसे कुछ छुपा नहीं था; कुछ भी उनकी बादशाहत से बाहर नहीं था। उनकी देर कभी ग़ैर-हाज़िरी नहीं थी।

लड़का और बादशाह

बेटा, नबी ﷺ ने इन्हीं जैसे लोगों के बारे में एक लंबी कहानी बयान फ़रमाई, जो सहीह मुस्लिम में महफ़ूज़ है, और यह उन अजीब तरीन वाक़िआत में से है जो आप कभी सुनेंगे।

एक ज़ालिम बादशाह था जिसके पास एक जादूगर था जो बूढ़ा हो चुका था। जादूगर ने कहा कि मेरे पास एक लड़का भेज दिया जाए जिसे मैं अपना फ़न सिखा दूँ। जादूगर और बादशाह के दरमियान रास्ते में उस लड़के का गुज़र एक राहिब के पास से हुआ, वो उसके पास बैठ गया, और उसकी बातें उसे भली लगीं — और वो रोज़ाना वहाँ रुकने लगा, जादूगर के पास देर से पहुँचने लगा, और देर की वजह से दोनों तरफ़ से मार खाने लगा। उसने राहिब से शिकायत की, जिन्होंने उसे सिखाया: अगर जादूगर मारे तो कहना घर वालों ने रोक लिया था; अगर घर वाले मारें तो कहना जादूगर ने रोक लिया था।

एक दिन उस लड़के का सामना एक बड़े दरिंदे से हुआ जो लोगों का रास्ता रोके खड़ा था। उसने अपने दिल में कहा: आज मुझे पता चल जाएगा कि बेहतर कौन है — जादूगर या राहिब। उसने एक पत्थर उठाया और कहा: ऐ अल्लाह, अगर राहिब का तरीक़ा आपको जादूगर के तरीक़े से ज़्यादा महबूब है तो इस दरिंदे को मार दीजिए ताकि लोग गुज़र सकें। उसने पत्थर मारा, और दरिंदा मर गया।

राहिब ने सुन कर कहा: मेरे बेटे, आज तुम मुझसे बेहतर हो। तुम आज़माए जाओगे — और जब आज़माए जाओ तो मेरी तरफ़ इशारा मत करना।

लड़का अल्लाह के हुक्म से अंधों और कोढ़ियों को शिफ़ा देने लगा। बादशाह का एक अंधा दरबारी उसके पास तोहफ़े ले कर आया। लड़के ने कहा: मैं किसी को शिफ़ा नहीं

देता; शिफ़ा अल्लाह देते हैं। अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाओ तो मैं दुआ करूँगा और वो तुम्हें शिफ़ा देंगे। उस आदमी ने ईमान क़ुबूल किया, और उसकी आँखें लौट आईं।

बादशाह ने पूछा: तुम्हारी आँखें किसने लौटाईं? उसने कहा: मेरे रब ने। बादशाह ने कहा: क्या मेरे अलावा भी तुम्हारा कोई रब है? उसने कहा: मेरा रब और तुम्हारा रब अल्लाह है। उसे उस वक़्त तक अज़ाब दिया गया जब तक उसने लड़के की तरफ़ इशारा न कर दिया।

लड़का लाया गया। बादशाह ने उसे अज़ाब दिया यहाँ तक कि उसने राहिब की तरफ़ इशारा कर दिया। राहिब से कहा गया कि अपना दीन छोड़ दो; उन्होंने इनकार किया। उनके सर की माँग पर आरा रखा गया और उन्हें दो टुकड़ों में चीर दिया गया। फिर वो दरबारी — उसे भी दो टुकड़ों में चीर दिया गया।

फिर लड़का: बादशाह ने उसे कुछ लोगों के साथ पहाड़ की चोटी पर भेजा, इस हुक्म के साथ कि अगर वो न फिरे तो उसे नीचे फेंक दिया जाए। पहाड़ पर लड़के ने दुआ की: 'ऐ अल्लाह, जिस तरह आप चाहें मुझे इन से काफ़ी हो जाइए।' पहाड़ हिल गया, और वो लोग गिर गए; लड़का चल कर बादशाह के पास वापस आ गया। उसे दोबारा भेजा गया, एक कश्ती में समुंदर के बीच, उसी हुक्म के साथ। उसने वही दुआ की; कश्ती उलट गई, लोग डूब गए, और लड़का फिर चल कर वापस आ गया।

और फिर, बेटा, इस कहानी का सबसे हैरत-अंगेज़ लम्हा आता है। लड़के ने बादशाह से कहा: तुम मुझे उस वक़्त तक नहीं मार सकोगे जब तक वो न करो जो मैं तुम्हें कहूँ। लोगों को एक मैदान में जमा करो, मुझे एक तने से बाँध दो, मेरे तरकश से एक तीर लो, उसे कमान में रखो, और कहो: बिस्मिल्लाहि, रब्बिल-ग़ुलाम — अल्लाह के नाम से, जो इस लड़के का रब है — फिर तीर चलाओ। अगर तुमने ये किया तो तुम मुझे मार सकोगे।

बादशाह ने बिल्कुल वैसा ही किया। तीर लड़के की कनपटी पर लगा; उसने अपना हाथ उस जगह रखा और उसका इंतिक़ाल हो गया।

और भीड़ — वो पूरी जमा शुदा क़ौम, जो देख रही थी — पुकार उठी: हम इस लड़के के

रब पर ईमान लाए! हम इस लड़के के रब पर ईमान लाए!

बेटा, समझिए उस लड़के ने क्या किया। उसने एक क़ौम की हिदायत की क़ीमत अपनी जान दे कर चुकाई। उसने अपनी मौत का ऐसा इंतिज़ाम करवाया कि वो सर-ए-आम हो, उस पर अल्लाह का नाम पुकारा जाए, और सब के सामने हो।

बादशाह के मुशीरों ने आ कर कहा: जिस चीज़ का तुम्हें ख़ौफ़ था वही हो गई — लोग ईमान ले आए! तो उसने रास्तों पर ख़ंदक़ें खुदवाईं, उनमें आग भरवाई, और हर उस मोमिन को उसमें डाल दिया गया जो अपना दीन छोड़ने से इनकार करता था। और उन्हीं में एक औरत आई जिसकी गोद में दूध पीता बच्चा था। वो किनारे पर झिझकी — अपने लिए वो तैयार थी, मगर अपने बच्चे के लिए क़दम रुक गया। और अल्लाह ने उस बच्चे को गोयाई दे दी: 'या उम्माह, इस्बिरी — ऐ मेरी माँ, सब्र कीजिए — बेशक आप हक़ पर हैं।'

बेटा, एक दूध पीता बच्चा आग के किनारे अपनी माँ को हिम्मत के अल्फ़ाज़ कह रहा है।

दो आगें, एक फ़ैसला

'इन्नल्-लज़ीन फ़तनुल्-मु'मिनीन वल्-मु'मिनाति सुम्म लम यतूबू — बेशक जिन्होंने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को अज़ाब दिया और फिर तौबा न की — फ़-लहुम 'अज़ाबु जहन्नम व लहुम 'अज़ाबुल्-हरीक़ — उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और उनके लिए जलने का अज़ाब है।'

बेटा, इस आयत के बीच में छुपी हैरत-अंगेज़ रहमत देखिए: 'सुम्म लम यतूबू' — और फिर तौबा न की। यानी: ये लोग भी — जिन्होंने ख़ंदक़ें खोदीं और ख़ानदानों को ज़िंदा जला दिया और बैठ कर देखा — अगर ये भी अल्लाह की तरफ़ पलट आते तो इन्हें भी माफ़ कर दिया जाता। बेटा, अगर उन के लिए वो दरवाज़ा खुला था, तो क्या आप अब भी समझते हैं कि आपके गुनाह इतने बड़े हैं कि उन तक ले ही नहीं जाए जा सकते?

और फ़ौरन, दूसरी तरफ़: 'इन्नल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति लहुम

जन्नातुन तज्री मिन तह्तिहल्-अन्हार — बेशक जो ईमान लाए और नेक अमल किए, उनके लिए वो बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-कबीर — यही बड़ी कामयाबी है।'

बेटा, अल्फ़ाज़ देखिए। दुनिया की नज़र में उस ख़ंदक़ के मोमिनीन हारे हुए थे — जले हुए, मिट गए, उनके नाम तारीख़ में दर्ज भी नहीं हुए। अल्लाह उनके अंजाम को 'अल-फ़ौज़ुल-कबीर' कहते हैं — बड़ी फ़तह। क़ुरआन जीतने और हारने की तारीफ़ ही बदल देता है: आग के पास आराम से बैठे हुए लोग हलाक होने वाले निकले, और आग के अंदर वाले कामयाब।

'इन्न बत्श रब्बिक ल-शदीद — बेशक आपके रब की गिरिफ़्त सख़्त है। इन्नहू हुव युब्दिउ व युईद — बेशक वही पहली बार पैदा करते हैं और दोबारा लौटाते हैं।'

और फिर, बेटा — 'सख़्त गिरिफ़्त' के ठीक बाद — क़ुरआन की सबसे ख़ूबसूरत नामों की जोड़ी आती है: 'व हुवल्-ग़फ़ूरुल्-वदूद — और वो बख़्शने वाले हैं, बहुत मोहब्बत करने वाले — ज़ुल्-'अर्शिल्-मजीद — अर्श के मालिक, बुलंद शान वाले — फ़'आ'लुल्-लिमा युरीद — जो चाहें कर गुज़रने वाले।'

बेटा, 'अल-वदूद' का मतलब है मोहब्बत करने वाले — और इसका मादा 'वुद्द' अरबी में मोहब्बत का सबसे नरम लफ़्ज़ है; ये वो मोहब्बत है जो अमल में ज़ाहिर होती है। अल्लाह ने अपनी सख़्ती और अपनी मोहब्बत को पिछली और अगली आयत में साथ रख दिया, क्योंकि मोमिन को दोनों थाम कर रखने हैं: वो गिरिफ़्त जो हर मज़लूम का बदला लेगी, और वो मोहब्बत जो हर लौटने वाले को क़ुबूल करती है।

महफ़ूज़ लौह में

फिर सूरह मुतकब्बिरीन को दो ऐसी क़ौमें याद दिलाती है जो ख़ुद को ना-क़ाबिल-ए-शिकस्त समझती थीं: 'हल अताक हदीसुल्-जुनूद — क्या आप तक लश्करों की ख़बर पहुँची — फ़िर'औन व समूद — फ़िरऔन और समूद की?' बेटा, क़दीम दुनिया का सबसे बड़ा लश्कर, और पत्थर के सबसे बड़े कारीगर — दोनों जा चुके।

'बलिल्-लज़ीन कफ़रू फ़ी तक्ज़ीब — बल्कि जो मुनकिर हैं वो झुठलाने में पड़े हैं — वल्लाहु मिंव्-वरा-इहिम मुहीत — और अल्लाह उन्हें पीछे से घेरे हुए हैं।'

बेटा, क्या मंज़र है: वो समझते हैं कि वो आज़ादी से आगे बढ़ रहे हैं, और अल्लाह ने उन्हें पूरी तरह घेरा हुआ है — पीछे से, हर तरफ़ से। कोई सिम्त ऐसी नहीं जिसमें भाग कर इंसान उनके इहाते से बाहर निकल सके।

और फिर सूरह ख़ुद किताब के बारे में दो आयतों पर ख़त्म होती है: 'बल हुव क़ुरआनुम्-मजीद — बल्कि ये बुलंद मर्तबा क़ुरआन है — फ़ी लौहिम्-महफ़ूज़ — महफ़ूज़ लौह में।'

बेटा, महसूस कीजिए कि ये सूरह का कितना मुकम्मल इख़्तिताम है। एक ज़ालिम ने मोमिनीन को ज़मीन से मिटाने की कोशिश की — उनके जिस्म जला दिए ताकि कुछ बाक़ी न रहे, ताकि उनकी कहानी उन्हीं के साथ मर जाए। और अल्लाह हमें बताते हैं कि हर चीज़ का रिकॉर्ड लौह-ए-महफ़ूज़ में है — वो महफ़ूज़ लौह, हर पहुँच से बुलंदतर, हर आग से परे।

उनके नाम तारीख़ की किताबों से जला दिए गए, और क़ुरआन में हमेशा के लिए लिख दिए गए। चौदह सदियों बाद, बेटा, मैं और आप यहाँ बैठे उनका ज़िक्र कर रहे हैं — जबकि उन्हें जलाने वाले बादशाह सिर्फ़ 'अस्हाबुल-उख़्दूद', हलाक होने वालों के नाम से याद किए जाते हैं।

यही हर सताए हुए मोमिन के लिए अल्लाह का जवाब है: आपके दुश्मन आपके जिस्म तक पहुँच सकते हैं; वो उस रिकॉर्ड तक नहीं पहुँच सकते। और जो लौह में महफ़ूज़ है, आख़िर में वही गिनती में आता है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. जब आप अपने दीन की वजह से तकलीफ़ उठाएँ, तो याद रखिए कि आप एक लंबी, बा-इज़्ज़त क़तार में हैं।

2. ज़ुल्म की वजह अक्सर ईमान के सिवा कुछ होती ही नहीं — 'उन्हें सिर्फ़ इसी बात

का बैर था कि वो ईमान लाए।'

3. अल्लाह की देर कभी ग़ैर-हाज़िरी नहीं: वो उस ख़ंदक़ के आसमान के मालिक थे और हर शोले के गवाह।

4. उस लड़के की दुआ हर बे-बसी में आपकी है: 'अल्लाहुम्मक्फ़िनीहिम बिमा शि'त' — ऐ अल्लाह, जिस तरह आप चाहें मुझे इनसे काफ़ी हो जाइए।

5. एक मुख़्लिस ज़िंदगी एक पूरी क़ौम को राह दिखा सकती है — और एक बच्चे के अल्फ़ाज़ आग के किनारे एक माँ को सँभाल सकते हैं।

6. ख़ंदक़ वाले भी तौबा कर लेते तो माफ़ कर दिए जाते — इसलिए कभी ये मत समझिए कि आपके गुनाह उनके दरवाज़े से बड़े हैं।

7. दोनों नाम साथ थामिए: शदीदुल-बत्श और अल-ग़फ़ूरुल-वदूद — सख़्त गिरिफ़्त और नरम मोहब्बत।

या ग़फ़ूर, या वदूद — हमें उन जलने वालों का सब्र और उस लड़के की हिम्मत अता फ़रमाइए, और हमारे नाम वहाँ महफ़ूज़ कर दीजिए जहाँ कोई आग नहीं पहुँचती। आमीन।